Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)
VOL- X | ISSUE- X | OCTOBER | 2023 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.367 | ISSN 2349-638x

मेवाड़ का सामाजिक ढांचा "जातीय एवं धार्मिक"

डॉ. सीमा वर्मा
सह आचार्य, आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट
टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर (राज.)

चन्द्रपाल जान्दू
शोधार्थी (इतिहास)
टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर (राज.)

सारांश

मेवाड़ का सामाजिक ढांचा परम्परागत रूप से उच्चता एवं निम्नता पद प्रतिष्ठा एवं वंशोत्पक जातियों के आधार पर ही संगठित था। सामाजिक संगठन में प्रत्येक जाति का महत्त्व उस जाति की वंशोत्पति एवं उसके द्वारा अपनाये जाने वाले व्यवसाय पर ही निर्भर था। जाति व्यवस्था की निरन्तरता एवं उच्च/निम्न का श्रेणीक्रम को स्थायित्व प्रदान करने में जातीय पंचायतों की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी।

मुख्य शब्द: सामाजिक ढांचा, प्रतिष्ठा, जाति, पंचायत, सामाजिक संगठन, जाति व्यवस्था

१८वीं शताब्दि तक मेवाड़ का समाज धर्म के आधार पर दो भागों में वर्गीकृत था, जिसमें हिन्दू और मुसलमान/हिन्दू सम्प्रदाय वैदिक, जैन और जनजातीय लोगों में विभाजित था जबकि मुस्लिम सम्प्रदाय–शिया और सुन्नी सम्प्रदायों में वैदिक मतावलम्बी भी शैव, शाक्त एवं वैष्णव तथा जेन श्वेताम्बर एवं दिगम्बर में उप–विभाजित थे। वहीं शैवों में संन्यासी, नाथ, गौसांई, आचार्यों में कई प्रकार के भेद थे। वैष्णवों में रामावत, नीमावत, माधवाचार्य और विष्णुस्वामी नामक चार सम्प्रदाय थे। फिर समस्नेही, दादूपंथी, कबीरपंथी, नारायणपंथी आदि अनेक शाखाओं में फैले हुए थे, जिनके आचार्यों–विचारों में उपासना की दृष्टि से काफी अन्तर पाया जाता था। वहीं मेवाड़ी समाज में जातिगत संरचना में सम्मिलित मुख्य जातियां इस प्रकार थी–

ब्राह्मण

ब्राह्मण जाति व्यवस्था की संरचना में वर्ण व्यवस्था के समय से जोड़कर देखा जा सकता है। परम्परागत सामाजिक ढांचे में सर्वोच्च स्थान ब्राह्मण जातियों को ही प्राप्त था किन्तु ब्राह्मण जातियां भी कई उप–जातियों में विभाजित थी। यद्यपि १८वीं शताब्दि के पूर्व अनेक ब्राह्मण उपजातियां मेवाड़ में ही विद्यमान थी जबकि १९वीं शताब्ति के आते–आते ये ब्राह्मण परिवार अन्य रोजगार की तलाश में अन राज्यों में एवं प्रान्तों में जाकर बस गए। वहीं मेवाड़ के अलग–अलग महाराणाओं ने ब्राह्मणों के सामाजिक कार्य एवं व्यवसायात्मक कौशल की महत्ता को समझते हुए मेवाड़ में भी आमन्त्रित कर बसाया था। ब्राह्मणों की उपजातियों में पारख, भट्ट, कन्नौजिया, सारस्वत, गौड़, आमेरा, मेनारिया, पालीवाल, श्रीमाली आदि प्रमुख थे। ये सब एक ही जाति की उपजाति होते हुए भी सामाजिक खान–पान व वैवाहिक सम्बन्धों को लेकर अलग–अलग ही जातियां थी, जिनका एक अलग श्रेणीकरण भी था। धीरे–धीरे ब्राह्मणों के आचार एवं व्यवहारों में विकृतियां आने लगी।

अध्ययन, अध्यापन, धार्मिक कर्मकाण्डों का सम्पादन, पूजा–पाठ, ज्योतिष कार्य, पौरोहिव्य आदि को ब्राह्मणों की परम्परागत वृत्ति मानी जाती थी। शिक्षा का कार्य करने वाले ब्राह्मणों को सामान्यतया राज्य की ओर से भूमि एवं वेतन भी दिया जाता

था। वहीं पुरोहित लोग अपने–अपन यजमानों से भेंट द्रव्य तथा वार्षिक यजमानी भी प्राप्त करते थे। राज्य द्वारा ब्राह्मणों को उनके कार्य हेतु धन–द्रव्य के साथ–साथ भूमि व मान–सम्मान भी दिया जाता था। राजकीय सेवाओं में ब्राह्मणों की नियुक्ति की जाती थी। सामान्यतया सैन्य सेवाओं में ब्राह्मणों की नियुक्त नहीं होती थी, फिर भी अनेक कुलीन, वर्ग के ब्राह्मण सैन्य अधिकारी के पदों पर पैतृक परम्परा के आधार पर नियुक्त थे।

१९वीं शताब्दी में ब्राह्मणों द्वारा विभिन्न अन्य व्यवसाय अपनाने के बावजूद ब्राह्मण प्राचीन परम्पराओं को बनाए रखने पर जोर देते रहे।

राजपूत

सामन्ती व्यवस्था पर आधारित समाज में राजपूत जाति का भी अपना एक विशिष्ट स्थान था। राज–परिवार व शासक जाति से सम्बन्धित होने के कारण ब्राह्मणों के बाद राजपूतों का सर्वोच्च आदर था। राजपूत अपने आप को सूर्य वंश, चन्द्र वंश और शेष अग्नि वंश से जोड़ते थे। इन तीनों वंशों में १६ सूर्यवंशी, १६ चन्द्रवंशीय, ४ अग्निवंशी व कुल ३६ कुलीन कहलाते थे। लेकिन मेवाड़ में इनमें से केवल १३ कुल ही विद्यमान थे। राजपूत अपनी मान–मर्यादा एवं उससे जुड़े शिष्टाचार के प्रति अति संवेदनशील थे। सामान्यतया राजकीय/सामन्ती सेवा के अतिरिक्त किसी अन्य व्यवसाय को करना ये अपनी प्रतिष्ठा के विरुद्ध मानते थे।

वैश्य

वैश्य अथवा महाजन जाति को सामान्यतया बनिया कहा जाता है। धीरे–धीरे इस जाति में शाखा, प्रशाख, गौत्र आदि के भेद भी उत्पन्न हो गए, श्रीमाल, ओसवाल, अग्रवाल, माहेश्वरी, पोरवाल, वीजावर्गीय आदि। मेवाड़ में वैश्य/महाजन जाति की शाखाएं थी। महाजनों में एक अर्द्ध जाति भी विद्यमान थी जिन्हें पंचाल/पांचड़ा भी कहा जाता था। व्यापार–वाणिज्य और लेन–देन महाजनों का परम्परागत व्यवसाय था। सिंघवी, गांधी, सर्राफ, नानावटी, दलाल, बजाज आदि यहां के प्रमुख व्यापारी थे।

कायस्थ

मेवाड़ी समाज में कायस्थों का भी काफी महत्त्वपूर्ण स्थान था। मेवाड़ में इस जाति की माथुर शाखा विद्यमान थी इसकी प्रशाखा के रूप में भटनागर की श्रेणी प्राप्त होती थी। श्रीवास्तव, कटारिया, निगम, सक्सेना आदि कायस्थों की प्रशाखाएं थी। महाराणा द्वारा स्वीकृत पट्टों परवानों पर सही का निशान लगाने वाला सहीवाला और राजकीय मंत्रालयों में काम करने वालों को बख्शी कहा जाता था।

राज्य तथा जागीरों में कामदार, सेनानायक, राजस्थ अधिकारी आदि अधिकांशत: इसी जाति के लोग ही रहे हैं। महाराणा व सामन्तों के अति निकट सम्पर्क के कारण इन्हें इनाम व जीविकोपार्जन के लिए भूमि आदि भी प्राप्त होती थी।

चारण–भाट

यद्यपि चारण भाट दोनों अलग–अलग जाति में वर्गीकृत हैं परन्तु दोनों के बीच के सामाजिक अन्तर को देखते हुए दोनों को एक–दूसरे की उपजाति माना जा सकता है। पठन–पाठन व लेखन के कार्य/साहित्यक रचनाओं के कारण इन्हें ब्राह्मणों के समकक्ष ही माना जाता था। इस जाति के साहित्यकारों द्वारा इनके महत्त्वपूर्ण रचनाएं लिखी गई जिनमें वीर विनोद, श्यामलदास की महत्त्वपूर्ण/उल्लेखनीय रचना है। चारणां की स्वामिभक्ति सदैव उल्लेखनीय रही थी। संकटकाल में ये अपने स्वामी के साथ रहते और इनके द्वारा अपने प्राणों तक की बलि भी दे दी जाती थी। संकट काल में राजपूत स्त्रियों को चारण के घर पर रखी जाती थी जहां पर इन्हें सुरक्षित समझा जाता था। महाराणा के राज्याभिषेक पर आशीर्वाद देने तथा शरणे का विशेषाधिकार भी चारणों को प्राप्त था।

कृषि–कर्मी एवं व्यावसायिक जातियां

इन उपरोक्त जातियों के अतिरिक्त मेवाड़ में कुछ ऐसी जातियां भी थी जो कि कृषि कार्य करती थी। जैसे—जाट, माली, डांगी, धाकड़ और जवाणा। ये सभी जातियां अपने—अपने जातीय नियमों से आबद्ध थी फिर भी इनमें कोई उच्च/निम्नता का भाव नहीं था। यद्यपि सामाजिक सहवास व वैवाहिक नियमों में पर्याप्त भिन्नताएं थी। कृषि जातियों के अतिरिक्त, अहीर, गुर्जर, गायरी, रेबाटी आदि पशुपालक जातियां भी मेवाड़ में थी जो कि कृषि के अतिरिक्त पशु—व्यापार व दुग्ध व्यवसाय भी करती थी। वहीं सुथार, मोची, कुम्हार, चितारा, छीम्पा, सिकलीगर, पटवा, खेराड़ी, कुंसारा, दर्जी, जड़िया, गांधी बलाई आदि भी अपना पैतृक व्यवसाय करने वाली जातियां भी विद्यमान थी।

आदिवासी जातियाँ

मेवाड़ राज्य के झोमट, मगरा, छप्पन व अपर माल के जंगलों में गरासिया, भील, मीणा जनजातियां भी रहती थी। ये सभी अलग—अलग शाखाओं में विभाजित थी। रक्त सम्बन्धों एवं वैवाहिक प्रतिबंधों में पर्याप्त भिन्नताएं इनमें पाई जाती हैं।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवरण के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि मेवाड़ की सभी जातियों में शाखा—प्रशाखा विद्यमान थी, ऊँच—नीच सामाजिक दूरी भी व्याप्त थी परन्तु जाति—भेद के बावजूद सामाजिक ढांचे में एक—दूसरे की मान—मर्यादा का पर्याप्त सम्मान किया जाता था। मेवाड़ी समाज की मुख्य विशेषता यह थी कि समाज में जाति एवं धार्मिक सहिष्णुता और सहयोग की भावना थी।

संदर्भ

१. वीर विनोद पृ. १५२६, २०४८, ४९, ओझाकृउदयपुर राज्य का इतिहास भाग—२, पृ. ६३३, ७७१, ८०५
२. सेन्सस ऑफ मेवाड़ स्टेट भाग—२, पृ. २३६—२३७
३. डॉ. गोपाल व्यास : मेवाड़ का सामाजिक व आर्थिक जीवन, पृ. ९८
४. उदयपुर रेकार्ड, देवस्थान, जमारवर्च बही नं. १७, संवत १९३०
५. बख्शीखाना उदयपुर, बही नं. ६१ संवत १९०२
६. रणछोड़ भट्ट : राजप्रशस्ति सर्ग ६ श्लोग १३२१
७. वीर विनोद, पृ. १७१४
८. डॉ. कालूराम शर्मा,
९. एम.ए. शेरिमं : हिन्दू ट्राइब्स एण्ड कास्ट्स भाग ३, पृ. १९—२३
१०. मेहता संग्राम सिंह कलैक्शन, हवाला नं. ८४
११. सहीवाला, अर्जुन सिंह जी का जीवन चरिण भाग २, पृ. ३—२४
१२. जेम्स टॉड भाग—१, पृ. ३६७
१३. जेम्स टॉड भाग—प्प् पृ. १६५८—५९
१४. जे.सी.ब्रुक : हिन्ट्री ऑफ मेवाड़, पृ. ७२—७३